MAR - 2018

M	T	W	T	F	S	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

Major Paper - IV

THURSDAY FEBRUARY 08

039-326 Week 06

भारतीय धर्म और धर्मनिरपेक्षता :→ भारत को विभिन्नता में एकता वाला देश कहा जाता है, जहाँ विभिन्न धार्मिक समूह एक साथ रहते हैं। भारत में लगभग 79.8% हिन्दू धर्म को मानने वाले, 14.23% इस्लाम धर्म को मानने वाले तथा बौद्ध, ईसाई एवं सिख धर्म को मानने वाले क्रमशः 0.70%, 2.3%, 1.72% रहते हैं। यहाँ सभी धर्मों की अपनी विचारधारा, मान्यता तथा अनुष्ठान एवं प्रथाएँ हैं। ये धर्मनिरपेक्ष दर्शन धर्म एवं सामाजिक मान्यताओं में विविधता के पश्चात भी एक सुसंगठित व्यवस्था बनाए रखने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(I) हिन्दू धर्म और धर्मनिरपेक्षता :→ हिन्दू धर्म समाज में भाईचारे एवं शांति स्थापित करने के लिए कुछ नैतिक दर्शन भी रखता है। हिन्दू धर्म का पवित्र ग्रंथ "श्रीमद् भगवद्गीता" सार्वभौमिक भाईचारे को प्रोत्साहित करता है तथा यह संदेश देता है कि सभी मनुष्य एवं प्राणी भगवान द्वारा सृजन किए गए हैं अतः सभी भगवान के समक्ष बराबर हैं। हिन्दू धर्म में भी अन्य धर्मों की भाँति भाईचारा, मानवता, शान्ति, सहिष्णुता एवं धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को मान्यता दिया गया है।

(II) ईसाई धर्म और धर्मनिरपेक्षता :→ प्रत्येक धर्म अपनी धार्मिक विचार धारा में स्वयं का धर्मनिरपेक्ष सिद्धांत रखता है। यीशु की शिक्षा एवं ईसाईयों की सामाजिक व्यवस्था सार्वभौमिक भाईचारे पर आधारित है। ईसाईयों की पवित्र पुस्तक बाइबिल है जो परमात्मा के समक्ष सभी को समान मानता है अर्थात सभी परमात्मा की ही संतान हैं।

(III) इस्लाम और धर्मनिरपेक्षता :→ अन्य धर्मों की ही भाँति इस्लाम धर्म भी धार्मिक विचारधारा पर आधारित है। इस्लाम धर्म को मानने वालों का तर्क है कि कुरान अल्लाह का सच्चा शब्द है तथा इनका मानना है कि कुरान मोहम्मद पैगम्बर के कथन का माध्यम है जो मानव समाज के अधिकार यथार्थता एवं ज्ञान पर आधारित है।

2018

09 FRIDAY FEBRUARY
Week 06 040-325

(iv) सिख धर्म और धर्मनिरपेक्षता :→ अन्य धर्मों की भाँति सिख धर्म भी समाज में प्रेम, शांति एवं सामाजिक सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव के उपदेशों को सिख धर्म के अनुयायी मानते हैं। गुरु नानक देव ने कहा है, "मैं न हिन्दू हूँ और न ही मुस्लिम हूँ, मैं तो भगवान का अनुयायी हूँ।"

(v) बौद्ध धर्म और धर्मनिरपेक्षता :→ आधुनिक लोकतंत्र एवं धर्मनिरपेक्षता में बौद्ध दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान है। बौद्ध धर्म को आधुनिक धार्मिक विचारधारा से युक्त माना जाता है, बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध मानव पीड़ा के कारणों के बारे में धर्मनिरपेक्षता की व्यापक समझ प्रस्तुत करते हैं। अतः बौद्ध धर्म का दूसरे धर्मों के प्रति सम्मान एवं भाईचारे का भाव रखने का उत्कृष्ट दार्शनिक विचार है।

धर्मनिरपेक्षता का महत्व :→ भारतीय संस्कृति की विशेष आवश्यकताओं एवं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा को अपनाया गया है। धर्मनिरपेक्षता का महत्व निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है :→

धार्मिकता का ह्रास :→ धर्मनिरपेक्षता के प्रचार व प्रसार के फलस्वरूप धर्म का प्रभाव कम होता है तथा मानवीय व्यवहार एवं सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करने में धर्म के हस्तक्षेप को अनुचित माना जाता है। व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा का निर्धारण भी धर्म के आधार पर नहीं होता वरन् उस व्यक्ति को अधिक पिछड़ा हुआ माना जाता है जो अधिकाधिक धार्मिक कर्मकाण्डों में विश्वास करता है।

(ii) धर्म के क्षेत्र में स्वतंत्रता
(iii) विभेदीकरण की प्रक्रिया
(iv) वैज्ञानिक अभिवृत्ति
(v) तटस्थ अवधारणा

धर्म के क्षेत्र के अनुसार व्यक्ति को किसी भी धर्म को अपनाने तथा किसी भी धार्मिक संगठन की सदस्यता ग्रहण करने की स्वतंत्रता होती है।

2018

Scanned with OKEN Scanner